MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 02, December 2023

हिन्दी सिनेमा में राष्ट्रभावना

सहायक शोधार्थी
डॉ. धनराज चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
श्री बी.पी.बी. आर्ट्स एण्ड एम.एच.जी.
कोमर्स कॉलेज, ऊँझा

शोधार्थी
मनसुरी सुफिया एस.
शोधार्थी (पीएच.डी. स्कोलर)
हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात
विश्वविद्यालय, पाटण

सारांश : "शायद तुम नहीं जानते, ये धरती शेर भी पैदा करती है।"[१]

प्रस्तुत शोध-आलेख वर्तमान हिन्दी सिनेमा में तक राष्ट्र-भावना प्रस्तुत की गई है। इन फिल्म में खूफिया जासूस, फौजी, केप्टन अलग-अलग किरदार निभाये है। उनके देश के प्रति अपना प्रेम दिखाया गया है।

"वतन के आगे कुछ नहीं, खुद भी नहीं।"[२]

देशभक्ति एक एहसास है जिसे हर भारतवासी को अपने भीतर महसूस करना चाहिए। बॉलीवुड ने भी ऐसी अनेक फिल्में बनाई है जो देशप्रेम की भावना से भरी हुई है। यहाँ भी यह भावना से भरी हुई फिल्म प्रस्तुत की गई है। और देशभक्ति गीत भी प्रस्तुत कीये गये है।

"ये इंडियन आर्मी है, हम दुश्मनी में भी एक शराफत रखते है।"[३]
"ये तीन रंगो में छपा कपड़े का टुकड़ा नहीं,
तुम्हारा राष्ट्रीय ध्वज है, इसका अपमान करोगे,
तो कभी सम्मान नहीं पाओगे।"[४]

शब्दकुंजी : देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभावना, फिल्म, चलचित्र, सिनेमा

❖ प्रस्तावना :

मनुष्य की वैचारिक संवेदनशीलता और जीवन जगत को वह जिस रुप में देखना चाहता है उसकी कल्पना ने कला को जन्म दिया जिसकी अभिव्यक्ति साहित्य, स्थापत्य, चित्र, शिल्प आदि में हुई। आगे चलकर विज्ञान की विभिन्न तकनीकों ने सिनेमा, टेलीविजन आदि इलेक्ट्रोनिक माध्यमो के कला रुप को जन्म दिया। सिनेमा की लोकप्रियता और उसके प्रभाव के कई कारण हो सकते है। यह रंग, दृश्य, संगीत, नृत्य का चमत्कारिक वर्चुअल यथार्थ है जिसका प्रभाव समाज, संस्कृति और उसकी वैचारिकी पर पड़ना अवश्यम्भावी है और पड़ रहा है।

भारतीय फिल्में आरंभ से ही एक सीमा तक भारतीय समाज का आइना रही है जो समाज की गतिविधियो को रेखांकित करती आई है। भारतीय फिल्मे तकनीकी और अन्य कलात्मक सुधारो के साथ आज नये मुकाम पर पहुँची है। भारतीय फिल्मो में तत्कालीन समाज की हर गतिविधियों की तस्वीर समाविष्ट है। उसका प्रभाव गाँव या शहर हर किसी को प्रभावित करता है। चारे गानो के माध्यम से या नायक की स्टाइल से लेकिन हमेशा फिल्मों ने दर्शको को प्रभावित किया है। भारतीय सिनेमा के विकास में ढुंढीराज गोविंद फालके जो दादा साहब फालके के नाम से अधिक जाने जाते है उन्हें भारत की प्रथम फीचर फिल्म राजा हरिशचंद्र बनाने का श्रेय जाता है। इसी फिल्म ने भारतीय चलचित्र उद्योग को जन्म दिया।

हिन्दी सिनेमा में आजकल ड्रामा, एक्शन, कॉमेडी ज्यादा दिखती है। पर कुछ एसी भी फिल्में है जिसमें राजनीति, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और देशभक्ति की भावना दिखाई देती है। कुछ ऐसी ही फिल्मों की समीक्षा यहाँ की गई है, जिसमें राष्ट्रभावना कूट-कूट कर भरी पड़ी है।

(१) फिल्म : राजी

- प्रसिद्ध दिनांक : ११ मई २०१८
- मुख्य नायक-नायिका : आलिया भट्ट, विक्की कौशल
- निर्देशक : मेघना गुलजार
- निर्माता : करण जौहर

यह फिल्म हरिदर सिक्का के २००८ में लिखे उपन्यास 'कॉलिंग सेहमत' का एक नाट्य रुपांतरण है, जो एक भारतीय अनुसंधान और विश्लेषण विंग (र्रा) एजट की एक सच्ची कहानी बतलाती है, जो सन् १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय अपने पिता के अनुरोध पर पाकिस्तान में सैन्य अधिकारियों के परिवार में शादी कर रहा है, ताकि भारत को खुफिया जानकारी मिल सके।

"वतन के आगे कुछ नहीं, खुद भी नहीं....."

यही कहती और दिखाती है आलिया भट्ट की फिल्म 'राजी' ये कहानी है दिल्ली विश्वविद्यालय में पढने वाली २० साल की एक कश्मीरी लडकी सहमत (आलिया भट्ट) की जिसे इंजेक्शन्स से भी डर लगता है और एक जिसे खून देखकर चक्कर आने लगते है। लेकिन सहमत के पिता वाहिद हिदायत (रजित कपूर) इंडियन इंटेलिजेंस के लिए काम करते है। सहमत के दादा ने आज़ादी की लड़ाई लडी थी और उनके कहने पर वाहिद इंडियन इंटेलिजेंस के लिए काम करने लगते है। साथ ही उन्होंने बॉर्डर पार से अच्छे संबंध बनाए हुए है और पाकिस्तान के कुछ बडे अफसरों को विश्वास भी जीता हुआ है, पाकिस्तानियों को लगता है कि वाहिद उनके लिए खुफिया जानकारी जुटाते है। वाहिद को जब पता चलता है कि फेफडे की बीमारी के कारण शायद अब ज्यादा दिन जिंदा न रह सके तब वह पाकिस्तान जाते है तो उन्हें पता चलता है कि बंगाल को लेकर

पाकिस्तान, भारत के खिलाफ कुछ बेहद बडी प्लानिंग कर रहा है, ये सुनते ही वो घबरा जाता है और ब्रिगेडियर सैयद (शिशिर वर्मा) के छोटे बेटे इकबाल सैयद (विक्की कौशल) से अपनी बेटी सहमत के निकाह की बात रख देते है।

कश्मीर वापस आपस अपनी पत्नी (सोनी राजदान) से इस बारे में बताते है और सहमत को दिल्ली से कश्मीर बुला लेते है यह बात सहमत को बताते है और सहमत पिता की बात मान लेती है। पाकिस्तान भेजे जाने से पहले सहमत को ट्रेनिंग देते है इंटेलिजेंस ऑफिसर खालिद मीर (जयदीप अहलाबात) ट्रेनिंग के दौरान सहमत को एक अलग ही दुनिया के बारे में सिखाया जाता है, जिसे सिखने में उसकी मदद करती है उसकी किसी भी नंबर को याद कर लेने की आदत, सहमत और इकबाल का निकाह हो जाता है। इसके बाद शुरु होता है सहमत का सफर... शुरुआत मे तो सहमत को सब अच्छा लगता है और वो आसानी से जानकारियाँ जुटा लेती है।

शादी के बाद इकबाल से सहमत की नजदीकियाँ बढ जाती है और दोनो एक दूसरे को मोहब्बत करने लगते है। फिल्म की कहानी में अहम मोड तब आता है जब सैयद परिवार का एक नौकर सहमत के लिए मुश्किले बढाने लगता है। 'ऐ वतन आबाद रहे तु, आबाद रहे तु।

ऐ तन, वतन मेरे आबाद रहे तु, मे जहाँ रहुं, जहाँ में याद रहे तु। ऐ वतन, मेरे वतन॥

तूही मेरी मंजिल है, पहचान तूजी से, पहोंचू में जहाँ भी मेरी बूनियाद रहे तु, ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तु।

मे जहाँ रहु, जहाँ मे याद रहे तु, ऐ वतन, मेरे वतन॥
तुज पे कोई गम की आँच आने नहीं दू,
कुर्बान मेरी जान तुज पे शान रहे तू।
तु, ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तु।
मे जहाँ रहु, जहाँ मे याद रहे तु, ऐ वतन, मेरे वतन॥

शादी के बाद से ही सैयद खानदान के नोकर को सहमत पर शक हो जाता है और यही शक वक्त-वक्त पर सहमत की मुश्किलें बढाता है और फिर एक दिन उसी के कारण सहमत का राज खुल जाता है... इसके बाद सहमत और इकबाल अपने-अपने देश के लिए कुर्बान करते है। और इस प्रेम कहानी का अंत होता है। यह कहानी अपने देश प्रति प्रेमभावना व्यक्त की गई है। सहमत अपने देश के लिए कुर्बानी देती है तब एक आवाज कानो में गूंजती है -

"लगन की बाज़ी है, चोट भी ताज़ी है
लगा दे दाव पर दिल, अगर दिल राजी है।"

(२) फिल्म : शेरशाह

- प्रसिद्ध दिनांक : १२ अगस्त २०२१
- मुख्य नायक-नायिका : सिद्धार्थ मल्होत्रा, कियारा आठवाणी
- निर्देशक : विष्णुवर्धन
- निर्माता : करण जौहर, हीर, यह जौहर, अपूर्व महेता, शब्बीर बॉक्सवाला, अजय शाह, हिमांशु गांधी

शेरशाह, २०२१ में ऑटीटी प्लेटफॉर्म पर प्रदर्शित एक शिन्दी भाषा में निर्मित फिल्म है, जिसका निर्देशन विष्णुवर्धन और लेखन संदीप श्रीवास्तव ने किया है फिल्म परमवीर चक्र विजेता कप्तान विक्रम बतरा के जीवन पर आधारित है। और इसका निर्माण धर्मा प्रोडक्शन्स और कारा एंटरटेनमेंट ने संयुक्त रुप से किया है। फिल्म में सिद्धार्थ मल्होत्रा ने कैप्टन विक्रम बतरा और उनके सद्दश जुड़वा मल्होत्रा ने कैप्टन बतरा की दोहरी भूमिका निभाई है, जबकि कियारा आडवाणी ने विक्रम की प्रेमिका डिम्पल चीमा की भूमिका निभाई है।

"फौजी के रुतबे से बड़ा कोई रुतबा नहीं होता,
वर्दी की शान से बड़ी कोई शान नहीं होती,
देश-प्रेम से बड़ा कोई धर्म नहीं होता।"

शेरशाह फिल्म में शुरु से अंत तक यही एकमात्र संदेश है।

फिल्म शेरशाह की कहानी कारगिल वॉर के नायक कैप्टन विक्रम बतरा के जीवन पर आधारित है, जो साल १९९९ में पाकिस्तान के साथ हुए कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे। कारगिल युद्ध में 'शेरशाह' कैप्टन विक्रम बतरा का कोडनेम था, जिसके प्रति ईमानदार रहते हुए उनकी बहादुरी और बलिदान ने भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई थी, कहानी की शुरुआत होती है पालमपुर गाँव से, जहाँ विकी यानी विक्रम बत्रा (सिद्धार्थ मल्होत्रा) पैदा हुए थे, बचपन से ही साहसी विकी एकदिन टीवी पर एक सीरियल देखता है, जिसमें आर्मी के जवानों की कहानी दिखाई जाती है, उसे वर्दी आकर्षित करती है और वो सेना में जाने का संकल्प लेता है। बड़ा होकर कॉलेज जाता है, तो अपने साथ पढनेवाली एक लडकी डिंपल चीमा (कियारा अडवाणी) को अपना दिल दे बैठता है, दोनों का प्यार परवान चढता है और बात शादी तक पहुँच जाती है।

विक्रम बत्रा शादी करने के लिए सेना में जाने का फैसला बदल लेते है। उनके पिता और दोस्त के समजाने बाद उनको समझ आता है सेना तो उसका पहला प्यार है, उसके बिना भला वो कैसे खुश रह पाएँगे। इसके बाद वो इंडियन मिलिट्री एकेडमी ज्वाइन करके सेना में अफसर बन जाते है।

"सूरज की तरह तरह जलता जा तु, आँधी की तरह बढ़ता जा तू,
चलता जा तु चलता जा, ये धर्म हे तेरा लडता जा।
सुरज की तरह जलता जा तु, आँधी की तरह बढता जा तु,
कदम ये तेरे कभी रुके ना...

जयहिंद की सेना, जयहिंद की सेना, जयहिंद की सेना....''

उनकी पहली पोस्टिंग जम्मू कश्मीर राइफल्स की १३वीं बटालियन में बतौर लेफ्टनेंट होती है। इसके बाद आतंकियो और सेना के बीच कई मुठभेड़ की घटनाएँ दिखाई जाती है, जिसमें विक्रम अपने अदम्य साहस का परिचय देते है। इसी दौरान पाकिस्तानी सेना और आतंकियों के संयुक्त मोर्चे को विफल करने के लिए उनको भेजा जाता है। अपनी वीरता और शौर्य की बदौलत वो पाकिस्तान द्वारा कब्जा की गई भारतीय पोस्ट को आजाद करा देते है, उनकी उपलब्धि को देखते हुए उनका प्रमोशन करके कैप्टन बना दिया जाता है। ''तिरंगा लहराकर आऊँगा या तिरंगे में लिपटकर आऊँगा, लेकिन आऊँगा जरुर.. अपने दोस्त से ये बाते बोलते है, तो वो हेरान रहकर उनकी तरफ देखता रह जाता है, वैसे केप्टन बत्रा का ये जज्बा पूरे भारतीय फौज का जुनून है। इसके बाद केप्टन बत्रा एक दिन नए मिशन पर जाते है, जहाँ वो शहीद हो जाते है। यही उनका देश के प्रति प्रेम उभर आता है।

''मन भरया बदल गया सारा, वे तु मेनु छड़ जाना, गल्ला तेरीया तो
लगदा ये यारा, वे भेथोन तेरा मन भरया।
गल-गल ने शक करदे ऐतबार जरा वे नै,
हून तेरी आँखियाँ च, मेरे लई प्यार जरा वै ने।
मेरा ते कोई हे नी तेरे बीन तेनु मिल जाना किसे दा सहारा
वे तु मेनु छड़ जाना.. गल्ला तेरी या तो लगदा ये यारा....।''

(३) फिल्म : पठान

- प्रसिद्ध दिनांक : २५ जनवरी २०२३
- मुख्य नायक-नायिका : शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण, आशुतोष राणा, जॉन अब्राहम, डिंपल कापडिया, सलमान खान
- निर्र्देशक : सिद्धार्थ आनंद
- निर्माता : आदित्य चोपड़ा

पठान (२०२३) नी भारतीय हिन्दी भाषा की जासूसी फिल्म है, जिसे सिद्धार्थ आनंद द्वारा लिखित और निर्देशित किया गया है और आदित्य चोपड़ा द्वारा उनके बैनर यशराज फिल्म के तहत निर्मित किया गया है। वाईआरएफ स्पाई युनिवर्स पर आधारित इस फिल्म में शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम है। यह यशराज फिल्म की सबसे महंगी परियोजना है। यह फिल्म वाईआरएफ की पहली डॉल्बी सिनेमा रिलीज है और पहली बॉलीवुड फिल्म है। जिसे पूरी तरह से आईमैक्स कैमरों के साथ शूट किया गया है।

फिल्म की कहानी शुरु होती है कश्मीर से, जहाँ ३७० की धारा हटते ही पाकिस्तान में खलबली का माहौल शुरु हो जाता है। आगे एक निजी टेरिरिस्ट गैंग दिखाया जाता है जो जिसका नाम ऑउटफिट एक्स होता है और इसका लीटर ल्जम (जॉन अब्राहम) होता है। जिम कभी हिन्दुस्तान का जवान हुआ करता था, हिन्दुस्तान से नफरत की भी जिम की एक कहानी होती है और अब एक मिशन सोंपा जाता है, जिसके तहत वह एक ऐसे वायरस को भारत में डालना चाहता है जो कुछ मिनटो में पूरे देश को खत्म करने की क्षमता रखता है।

ऐसे मे वनवास काट रहे पठान को बुलाया जाता है जो अपने देश को बचाने के लिए कुछ भी कर सकता है। इस मिशन में रुबीना (दीपिका पादुकोण) भी पठान के साथ आती है, पठान सबसे खतरनाक आतंक से अपने देश को बचाता है यही उसकी देश के प्रति राष्ट्रभावना है।

(४) फिल्म : मिशन मजनू

- प्रसिद्ध दिनांक : २० जनवरी २०२३
- मख्य नायक-नायिका : सिद्धार्थ मल्होत्रा, रश्मिका मंदाना, परमीत सेठी, शारिब हाशमी, कुमुद मिश्रा, रजित कपूर
- निर्देशक : शांतनु बागची
- निर्माता : परवेज़ शेख, असीम अरोरा

मिशन मजनू शांतनु बागची द्वारा निर्देशित और रॉनी स्क्रूवाला, अमर बुटाला और गरिमा मेहता २०२३ की भारतीय हिन्दी भाषा की जाजूसी थ्रिलर फिल्म है। सिद्धार्थ मल्होत्रा अभिनीत, यह फिल्म १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध से पहले और उसके दौरान की है।

१९७१ के भारतीय आम चुनाव अभियान के दौरान, भारत के प्रधानमंत्री को रो प्रमुख, आरएन काओ द्वारा स्थिति से अवगत कराया गया, और उन्हें परमाणु सुविधा के स्थान का पता लगाने का निर्देश दिया। अमनदीप हैंडलर, शर्मा ने उन्हें 'मिशन मजनू' नाम के अपने नए मिशन के बारे में बताया। रास्ते में वह पाकिस्तान में तैनात दो अन्य रॉ एजेंट असलम उस्मानिया और रमनसिंह से मिलते है। अमनदीप यह जानकारी जुटाने में कामयाब होता है कि पाकिस्तान वास्तव में परमाणु हथियार बना रहा है।

अमनदीप कुण्टा में परमाणु सुविधा का पता लगाने का प्रबंधन करता है, हालाकि वह भौतिक साक्ष्य एकत्र करने में असमर्थ है। शर्मा ने उन्हें बताया कि इस्ताइल ४८ घंटे में क्वेटा पर हमला करने वाला है। अमनदीप वापस कटुता जाता है और परमाणु सुविधा में काम करनेवाले सैन्यकर्मियों के बाल इकठ्ठा करता है, जिसे वह चोरी-छिपे भारत भेज देता है। भारत में इसका परीक्षण किया गया और इसमें विकिरण की ट्रेस मात्रा पाई गई, जो कटुता और पाकिस्तान प्रशासन के तहत प्लूटोनियम की उपस्थिति की और इशारा करता है। क्वेटा पर इस्ताइल का हमला टल गया।

“तूजे याद रखा है हर लम्हा, पलभर को भी ना भुलाया है।
गोलियों खा के सिने पर तेरे इश्क का कर्ज चुकाया है।
ए जाने-ए-वतन मुझे तेरी कसम, मेरी पेहली और अंतिम धडकन तुम हो, तुम हो..
मेरे लाख जनम हो तुजपे खतम, मेरे जिस्म रुप के पाक
सनम तुम हो.. हो तुम हो...
वापस लोट के आऊँगा मे, जो रेह गये कर्ज चूकाऊँगा में...
धर्म भी, करम भी, वादा भी, कसम भी, तुम हो.. हो तुम हो...
मेरी जन्नत की खुदाई तुम हो, सारे जखमों की दवाई तुम हो...।”

इस मामले की जानकारी भारत के प्रधानमंत्री को दी गई है। अमनदीप अपनी गर्भवती पत्नी के साथ दुबई के रास्ते पाकिस्तान से भागने की कोशिश करता है, इस बात से अनभिज्ञ कि उसका आई.एस.आई एजेंट उसका पीछा कर रहे है। अमनदीप आई.एस.आई एजेंटो को काफी देर तक विचलित करता है ताकि वह अपनी पत्नी को हवाई जहाज में चढ़ने दे और बिना किसी बाधा के छेड दे, इस प्रक्रिया में वह मारा जाता है। वह देश के लिए खुफिया जानकारी प्राप्त करता यही उसका देश के प्रति प्रेम है।

“अंबर तले जग रहे, हम तेरे आँचल तले रहते है,
दुनिया में हम ही अकेले है, जो माटी को मा कहते है, माटी को मा कहते है।
जागे तेरे लिए सारी अमर, तु ही आना सुलाने हमे,
सर तेरा ऊँचा रहे ए वतन, कोई जाने, न जाते हमे,
कोई जाने, ना जाने हमे॥
हो खूशबु के जेसे हवाओ मे हम गुमनम से बेठे है,
दुनिया में हम ही अकेले है, जो माटी को मा कहते है,
जो माटी को मा कहते है॥

❖ निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध आलेख में हिन्दी सिनेमा मे रही राष्ट्रभावना को उजागर किया है। कई फिल्में सच्ची घटना पर आधारित है जिनका नाट्यरुपांतर किया गया है। कुछ फिल्में राष्ट्र पर आधारित है तो कुछ आर्मी पर आधारित है। कुछ एसी फिल्में है जो देश के लिए भिन्न-भिन्न किरदार निभाये है जिसमें भारत के प्रति उनका प्रेम नजर आता है और उनकी देश के प्रति राष्ट्रभावना दिखाई देती है।

❖ संदर्भ सूचि :

१. Razi Movie Review in Hindi - www.abplive.com
२. शेरशाह रिव्यु - www.ichowk.in
३. पठान कहानी - hindifilmbeat.com
४. मिशन मजनू - Wikipedia

Certificate No.:010212202316

multidisciplinary COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (on-line)
International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

डॉ. धनराज चौधरी

In recognition of the publication of the paper entitled

हिन्दी सिनेमा में राष्ट्रभावना

Published in Volume 01, Issue 02, December 2023.

EDITOR IN CHIEF

Certificate No.:010212202316

multidisciplinary COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (on-line)
International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

मनसुरी सुफिया एस.

In recognition of the publication of the paper entitled

हिन्दी सिनेमा में राष्ट्रभावना

Published in Volume 01, Issue 02, December 2023.

EDITOR IN CHIEF